International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 01-06-2023, Accepted: 16-06-2023, Published: 01-07-2023
Volume 5, Issue 2, 2023, Page No. 42-43

प्रवासी भारतीय एवं भारत–रूस सम्बंध

अखिलेश पाल
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कालेज, प्रयगराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डायस्पोरा है। पचास देशों से अधिक में रह रहे प्रवासी भारतीयों की जनसंख्या करीब दो करोड़ है। रूस के सांख्यिकी विभाग गरोसस्तात'त के अनुसार रूस में बीस हजार से अधिक भारतीय रहते हैं। जो रूस में अपने वातावरण और संस्कृति से कटे होने तथा अपनी विरासत और रूसी सभ्यता से तालमेल, रहन–सहन की समस्याओं, आस्थाओं व विचारों के विरोधाभाषों से जद्दोजहद करते दिखाई देते हैं। रूस में प्रवासी भारतीयों को अपनी संस्कृति से मोह है। सोवियत संघ के विघटन के बाद उसका सबसे बड़ा गणराज्य 'रूस' अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण इकाई के रूप में अवतरित हुआ। भारत के साथ संबंध हमेशा से रहे हैं और यह हमारे देश की विदेश नीति की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में से एक हैं। हमारी मित्रता के आपसी संबंध सहानुभूति, विश्वास और खुलेपन से भरे हुए हैं।

मुल शब्दः प्रवासी, भारतीय, भारत, रूस, सम्बंध

7 नवम्बर, 1917 को सोवियत संघ की स्थापना की गयी थी। सन् 1921 में लेनिन ने नई आर्थिक नीति की घोषणा की और 1922 में स्टालिन को कम्युनिस्ट पार्टी का महामन्त्री बना दिया गया। उसके बाद 1956 में खुश्चेव तथा 1964 में ब्रेझनेव पार्टी के महामन्त्री बने। इन दिनों पार्टी के महामन्त्री की स्थिति एक अधिनायक की भांति रही। 1985 में गोर्वाच्योव पार्टी के महामन्त्री बने। उन्होंने ग्लास्नोस्त (खुलापन) और पैरेस्त्रोईका (पुनर्निर्माण) के सिद्धान्त लागू किये। प्रतिफल यह हुआ कि दिसम्बर, 1991 में सोवियत संघ का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। 26 दिसम्बर, 1991 को सोवियत संघ की संसद सुप्रीम सोवियत ने अपने अन्तिम अधिवेशन में सोवियत संघ को समाप्त किये जाने का प्रस्ताव पारित कर दिया और स्वयं के भंग होने की भी घोषणा कर दी। इसके साथ ही 70 वर्ष पुराने सोवियत संघ का अन्त हो गया।

1991 की कतिपय घटनाएं सोवियत संघ को विघटन की दिशा में ले जाने की दृष्टि से अत्यन्त उल्लेखनीय हैं। 19 अगस्त, 1991 को गोर्बाच्योव को राष्ट्रपति पद से हटा दिया गया तथा उपराष्ट्रपति गेन्नादी यानायेव को राष्ट्रपति पद का कार्यभार सौंप दिया गया। 22 अगस्त, 1991 को विद्रोह के असफल होने के बाद गोर्वाच्योव वापस लौटे तो एस्टोनिया के बाल्टिक गणराज्य ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। 25 अगस्त, 1991 को गोर्वाच्योव ने कम्युनिस्ट पार्टी का प्रमुख पद छोड़ा तो साथ ही उक्रेन ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। 29 अगस्त, 1991 को सुप्रीम सोवियत ने कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। 31 अगस्त, 1991 को अजरकिस्तान ने, 1 सितम्बर, 1991 को उजबेकिस्तान और किर्गिस्तान ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। 7 सितम्बर, 1991 को सोवियत संघ के तीन बाल्टिक गणराज्यों–लिथुआनिया, एस्टोनिया और लाटविया को मान्यता प्रदान कर दी। 13 दिसम्बर, 1991 को येल्तसिन और गोर्वाच्योव में सोवियत संघ को समाप्त करने पर सहमति हो गयी।

सोवियत संघ के विघटन के बाद उसका सबसे बड़ा गणराज्य 'रूस' अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण इकाई के रूप में अवतरित हुआ। जहां सोवियत संघ की कुल आबादी 28 करोड़ 70 लाख थी वहां रूस की कुल आबादी 14 करोड़ 77 लाख है (सोवियत संघ की 52 प्रतिशत जनसंख्या रूसी गणराज्य में निवास करती है) तथा आज भी वह क्षेत्रफल की दृष्टि से दुनिया का सबसे बड़ा देश है। पूर्व सोवियत संघ की भूमि का 75 प्रतिशत भाग रूस के पास है और ऐसा माना जाता है कि पूर्व सोवियत संघ का औद्योगिक और कृषि उत्पादन का 70 प्रतिशत रूस से ही होता था। सोवियत संघ का 90 प्रतिशत तेल, 50 प्रतिशत गेहूं, 50 प्रतिशत कपड़ा, 50 प्रतिशत खनिज रूसी गणराज्य में ही पैदा होता था। रूस का स्वर्ण उद्योग विश्व में दूसरे स्थान पर आता है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भी रूस सोवियत संघ का विशालतम गणराज्य था। सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में इस गणराज्य का अपना विशिष्ट योगदान रहा है क्योंकि यह सर्वाधिक संसाधन सम्पन्न गणराज्य है। सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में पुराने सोवियत संघ का स्थान प्रदान कर दिया गया तथा उसने वचन दिया कि पुराने सोवियत संघ के समस्त अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों का वह निर्वाह करेगा। पुराने सोवियत संघ के विघटन के बाद बचा हुआ रूस एकमहाशक्ति के रूप में तो उभरा ही क्योंकि हजारों मिसाइल रूस के दूर–दूर तक लगे हुए हैं तथा राष्ट्रपति गोबांच्योव ने तथाकथित 'परमाणु बटन' या 'ब्रीफकेस' रूसी राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन को सौंप दिये थे।

विश्व में रूस की भूमिका उसके नायक बोरिस येल्तनिस के व्यक्तित्व से तय होने लगी। सत्ता में येल्तसिन के आने से रूसी लोगों की यह दुविधा खत्म हो गयी है कि वे एशियाई ताकत हैं या यूरोपीय। मास्को विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर दमित्रि फ्योद्रोरोव यही बात कहते हैं, ''हमें भरोसा है कि अब हम अपने संसाधन और ऊर्जा को अमरीकी खेमे से लड़ने या तीसरी दुनिया को चलाने में बर्बाद नहीं करेंगे। हमें आत्म–निरीक्षण और कड़ा परिश्रम करना चाहिए तथा यूरोपीय समुदाय में शामिल हो जाना चाहिए जहां के हम हैं।'' 19 दिसम्बर, 1991 को ही बोरिस येल्तसिन के रूसी परिसंघ ने क्रेमलिन की सोवियत सरकार की परम्परागत सीट और विदेश मन्त्रालय को अपने नियन्त्रण में कर लिया।

भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा डायस्पोरा है। पचास देशों से अधिक में रह रहे प्रवासी भारतीयों की जनसंख्या करीब दो करोड़ है। रूस के सांख्यिकी विभाग गरोसस्तात'त के अनुसार रूस में बीस हजार से अधिक भारतीय रहते हैं। जो रूस में अपने वातावरण और संस्कृति से कटे होने तथा अपनी विरासत और रूसी सभ्यता से तालमेल, रहन–सहन की समस्याओं, आस्थाओं व

विचारों के विरोधाभाषों से जद्दोजहद करते दिखाई देते हैं। रूस में प्रवासी भारतीयों को अपनी संस्कृति से मोह है। प्रवासी भारतीयों को एक प्रश्न–पत्र दिया गया था जिसमें उन्होंने भारत के बारे में धारणा व्यक्त की। सभी ने भारत की सराहना की और भारत को एक सुन्दर देश कहा। इस प्रश्न के उत्तर में कि आपकी दृष्टि से भारत अथवा भारतीय संस्कृति की क्या विशेषता है, अधिकांश ने आध्यात्मिकता एवं अहिंसा को भारतीय संस्कृति की विशेषता कहा।

पूर्व प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह भी राष्ट्रपति पुतिन की 2012 की भारत यात्रा के दौरान दिए गए भाषण में अपने समकक्ष से सहमत थे, ''राष्ट्रपति पुतिन भारत के एक मूल्यवान मित्र और भारत–रूस रणनीतिक साझेदारी के मूल वास्तुकार हैं''. दोनों देश साझा राष्ट्रीय हित के मामलों पर निकटता से सहयोग करते हैं जिनमें संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स, जी 20 और एससीओ शामिल हैं। रूस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत को स्थायी सीट दिलाने का भी समर्थन करता है। इसके अलावा, रूस ने एनएसजी और एपीईसी में शामिल होने के लिए भारत का मुखर समर्थन किया है। इसके अलावा, इसने पर्यवेक्षक के दर्जे के साथ सार्क में शामिल होने में भी रुचि व्यक्त की है, जिसमें भारत एक संस्थापक सदस्य है।

रूस वर्तमान में दुनिया के केवल दो देशों में से एक है (दूसरा जापान है) जिसके पास भारत के साथ वार्षिक मंत्री–स्तरीय रक्षा समीक्षा के लिए एक तंत्र है। भारत–रूसी अंतर–सरकारी आयोग (आईआरआईजीसी) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी भी देश के साथ भारत के सबसे बड़े और सबसे व्यापक सरकारी तंत्रों में से एक है। भारत सरकार का लगभग हर विभाग इसमें शामिल होता है।

भारत के साथ संबंध हमेशा से रहे हैं और यह हमारे देश की विदेश नीति की सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं में से एक हैं। हमारी मित्रता के आपसी संबंध सहानुभूति, विश्वास और खुलेपन से भरे हुए हैं। और हमें स्पष्ट रूप से कहना होगा कि उन पर कभी भी असहमति या संघर्ष का साया नहीं पड़ा। यह समझ – यह वास्तव में हमारे लोगों की साझी विरासत है। हमारे देश में, रूस में और भारत में इसे महत्व दिया जाता है और इसकी सराहना की जाती है। और हमें अपने देशों के बीच इतने घनिष्ठ, इतने घनिष्ठ संबंधों पर गर्व है।

यूक्रेन युद्ध की शुरुआत के बाद और अमेरिका और यूरोप द्वारा रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण, इसने भारत को रियायती दर पर तेल और रासायनिक उर्वरक उपलब्ध कराना शुरू कर दिया, जिससे भारत–रूस द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा 13 बिलियन डॉलर [2021–2022] से बढ़कर 27 बिलियन डॉलर हो गई। 2022 यह इसे भारत का सबसे बड़ा तेल और उर्वरक आपूर्तिकर्ता बना देगा। 2023 तक भारत–रूस व्यापार 30 अरब डॉलर को पार करने की उम्मीद है। भारत ने पश्चिमी दुनिया द्वारा रूसी कच्चे तेल पर लगाई गई मूल्य सीमा को भी स्वीकार करने से इनकार कर दिया है। हालांकि सीआईए के निदेशक विलियम जे. बर्न्स ने कहा है कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों ने रूस से परमाणु युद्ध के खतरे को टालने में मदद की है।

पुतिन 24 अगस्त 2023 को मॉस्को में एक वीडियो लिंक के माध्यम से दक्षिण अफ्रीका में आयोजित 15वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के प्रतिभागियों को संबोधित करते हैं। यूक्रेन युद्ध के बाद रूस की नई विदेश नीति अवधारणा पश्चिम के प्रतिकार के रूप में भारत और चीन के साथ अपने संबंधों को गहरा करने का प्रस्ताव करती है, लेकिन बीजिंग और नई दिल्ली की अपनी अनूठी नीतियां हैं। 21वीं सदी के पहले दो दशकों में, चीन–रूस गठबंधन में शक्ति संतुलन उलट गया है, चीन और भारत के बीच संबंध धीरे–धीरे बिगड़ते गए। चीन अब वरिष्ठ भागीदार है, जबकि रूस यूक्रेन में दलदल से और भी कमजोर हो गया है और मॉस्को इंडो–पैसिफिक शब्द की वैधता को भी खारिज कर देता है, हालांकि नई दिल्ली की पूरी रणनीति इस संरचना की सफलता पर निर्भर करती है। यूक्रेन युद्ध के दबाव में रूस द्वारा भारत को एस–400 एंटी–मिसाइल सिस्टम की डिलीवरी में देरी के साथ, भारत में जनता की राय ने चीन के साथ शक्ति का एक स्थिर संतुलन सुनिश्चित करने की इसकी क्षमता पर सवाल उठाया है। कुछ विचारों का मानना है कि पुतिन के चीन के करीब आने से भारत–रूस संबंध बहुत उच्च मूल्य वाली रणनीतिक साझेदारी से घटकर लेन–देन वाली साझेदारी में तब्दील हो रहा है''। भारत ने चीन–रूस संबंधों की गहराई के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए ''मल्टी–एलाइनमेंट रणनीति'' को भी आगे बढ़ाया है।

जून 2023 में, भारत और रूस के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाने के लिए मॉस्को में भारतीय दूतावास में ''नमस्ते मॉस्को'' नामक एक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। अगस्त 2023 में, दूतावास ने भारतीय स्वतंत्रता के 76 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में समारोह आयोजित किया। दिसंबर 2023 में, भारत के विदेश मंत्री एस जयशेनकर ने पांच दिवसीय यात्रा पर पुतिन और विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव से मुलाकात की, दोनों देशों के ''सर्वकालिक उच्च'' व्यापार मात्रा की प्रशंसा की, व्यापार को ''संतुलित'', ''टिकाऊ'' बताया। और ''उचित बाजार पहुंच'' प्रदान करना।

संदर्भ सुची

1. https//en-wikipedia-org/wiki/India%E2%80%93Russia_relations
2. https//www-garbhanal-com/roos&mein&pravaasee&bhaarateey&samaaj
3. फडिया, बी एल, अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक सिद्धांत एवं समकालीन राजनीतिक मुद्दे, साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा
4. पंत, पुष्पेश, जैन, श्रीपाल, (2000), 'भारतीय विदेश नीति : नये आयाम', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2000
5. जैन, बी० एम० (1995), 'प्रमुख देशों की विदेश नीतियां', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, प्रथम संस्करण।
6. खन्ना वी. एन. भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नोएडा
7. चावड़ा, वीके 1967), भारत, ब्रिटेन, रूसय ब्रिटिश राय में एक अध्ययन, 1838–1878
8. बुधवार, प्रेम के.(2007), 'भारत–रूस संबंधः अतीत, वर्तमान और भविष्य।' भारत तिमाही
9. जोशी, निर्मला, और राज कुमार शर्मा (2017), 'बदलते यूरेशियन परिप्रेक्ष्य में भारत–रूस संबंध।' भारत तिमाही